# मैत्रयी पुष्पा के उपन्यासों में स्री विमर्श
## ('इदन्नमम' उपन्यास के विशेष संदर्भ में)

देश में स्वतंत्रता से पहले ही स्री लेखन हो रहा था लेकिन देश स्वतंत्रता के बाद बड़े पैमाने पर स्री लेखन हुआ| एक बहुत बड़े सामाजिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन का यह परिणाम था| स्री वर्ग ने अपने जीवन के अनुभवों को बहुत स्पष्टता के साथ साहित्य में अभिव्यक्त किया| हिंदी उपन्यासकारों में चित्रा मुदगल, उषा प्रियवंदा, कृष्णा सोबती, प्रभा खेतान, ममता कालिया आदि लेखिकाओं ने नारी जीवन को लेकर उपन्यास लिखे हैं| पिछले सत्तर-अस्सी वर्षों के रचनात्मक साहित्य में स्त्री विमर्श का जो स्वरुप उभर कर आया है| वह स्त्री की दयनीय स्थिति से शुरू होकर समाज के बनाये नारी आदर्श के ढांचे को तोड़ने की छटपटाहट, रूढ़ संस्कारो से मुक्ति, अपनी स्वतंत्र अस्मिता की पहचान, निर्णय का अधिकार, आर्थिक रूप से निर्भर एवं अपनी क्षमता और प्रतिभा का सतत विकास एवं जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में अपनी उपस्थिति थी दर्ज़ करने के संघर्ष को अपने में समेटे हुए हैं| हिन्दी साहित्य के इतिहास में उत्तर आधुनिक दौर में हाशिए का समाज केंद्र में आया| मैंने स्री विमर्श की महत्वपूर्ण लेखिका मैत्रेयी पुष्पा का उपन्यास 'इदन्नमम' उपन्यास पढ़ा और इस उपन्यास ने मुझे बहुत प्रभावित किया|

मैत्रेयी पुष्पा जी आज अग्रसर लेखकों में अपना स्थान बना चुकी हैं। 'बुंदेलखंड' क्षेत्र में पली - बढ़ी मैत्रेयी पुष्पा जी ने अपने साहित्य का विषय ही 'बुंदेलखंड अँचल', वहाँ के लोकजीवन और नारी जीवन को ही बनाया हैं, जिसके माध्यम से पूरे भारतीय ग्रामीण जीवन का लेखा - जोखा प्रस्तुत किया हैं। मैत्रेयी जी ने उपन्यास, कहानी, लेख, संस्मरण में अपनी कलम की लेखनी चलायी हैं, और पाठकों को तक अपने मन की बात पहुँचायी हैं। मैत्रेयी जी ने अपने उपन्यास में नारी को केंद्र में रखकर ही लिखा हैं। मैत्रेयी जी के उपन्यास 'बेतवा बहती रही'(1993), 'अल्मा कबूतरी', 'स्मृति दंश' तथा कहानी संग्रह 'चिन्हार' भारत के ग्रामीण समाज का आईना हैं। मैत्रेयी जी की आत्मकथा दो खण्डों में प्रकाशित हुई हैं, 'कस्तूरी कुण्डल बसै' और 'गुड़िया भीतर गुड़िया' जो चर्चित रही है|

मैत्रेयी पुष्पा का 'इदन्नमम' उपन्यास बुन्देल खंड की पृष्ठभूमि पर आधारित है और इस उपन्यास में नारी जीवन के विभिन्न पहलुओं को लेखिका ने पाठकों के सामने रखा है| उपन्यास में तीन पीढ़ियों की एक बेहद सहज कहानी तीनों को समान्तर भी रखती है और एक- दूसरे के विरुद्ध भी। इस उपन्यास में लेखिका ने स्री स्वतंत्रता के संदर्भ में जो विचार व्यक्त किए है उससे मैं बहुत प्रभावित हुई| इसलिए इस उपन्यास में नारी जीवन के तमाम पहलुओं पर विद्वानों द्वारा गहराई से अध्ययन हो रहा है| इस उपन्यास में विशेष रूप स्त्री जीवन के विभिन्न पहलुओं का विश्लेषण किया गया है| स्री की पारिवारिक स्थिति, आर्थिक समस्याएं, मानसिक संघर्ष, अशिक्षा, पुरुषप्रधान समाज का वर्चस्व, विधवाओं की समस्याएं आदि विभिन्न मुद्दों पर लेखिका ने अपने विचार रखें हैं और स्री स्वतंत्रता के संदर्भ में अपने

स्पष्ट विचार अभिव्यक्त किए हैं|

'इदन्नमम' उपन्यास की पहली पीढ़ी बऊ (दादी) है, जो अपने जीवन में अपने तरीके से संघर्ष करती हुई दिखाई देती है| बऊ (दादी) विधवा हो जाती है किन्तु वह अपने जीवन में किसी भी को अपनी तरफ उंगली उठाने का मौका नहीं देती है, और वह अपने इकलौते बेटे महेंद्र सिंह को पाल-पोस कर बड़ा करती है, लेकिन महेंद्र सिंह का अचानक देहांत होने से बऊ और बहू प्रेम, पोती मन्दा को कुछ समय के लिए अकेले होने का एहसास होता है, किन्तु फिर वह संघर्ष करते हुए आगे बढ़ जाती है|

महेंद्र सिंह के देहांत होने के कुछ दिनों बाद प्रेम (माँ), अपने जीजा रतन यादव के साथ भाग जाती है, तब बऊ (दादी) अकेले पड़ जाती है| बऊ मंदा पोती का पालन-पोषण करती है प्रेम (माँ) के भाग जाने के बाद बेटी मन्दा और जमीन-जायजाद को भी अपने नाम करना चाहती है, लेकिन बऊ ऐसा नहीं होने देती है| वह मन्दा को भुमीखोर व लुटेरों से बचाने के लिए दूसरे गाँव श्यामली पंचम सिंह के पास चली जाती है| बऊ, बहू (प्रेम) को घर छोड़ के चले जाने पर मन्दा से कहती है- **"बिन्नू, वे ज़माने तो सतियो के थे | कायदे से तो सती हो जाना चाहिए था, पर हमारी राह में महेन्द्र की किलकारी आ गई | वेद- पुराण में भी बताया गया है, की बाल-बच्चे की माता सती बाद में, माता पहले , और फिर अपने ससुर की, अपने पति की वंशबेल की चिंता से बिटिया , झोंक दी उम्र की हिंसा, देह के होम कुंड में|"**[1]

'इदन्नमम' उपन्यास में नैतिकता एवं नारी-नारी विषयक मान्यताएं कुसुमा भाभी के माध्यम से व्यक्त होती है| कुसुमा का पति यशपाल उसे त्याग देता हैं, और दूसरी शादी कर लेता हैं|कुसुमा अपने अविवाहित चाचा - ससुर, दाऊजी अमर सिंह की ओर आकर्षित हो जाती है| दोनों एक दूसरे को प्रेम करने लगते है और उत्पन्न संतान पर गर्व भी करती है| कुसुमा यह सब कुछ उसी परिवार में पति की आंख के सामने रह कर करती है| परिवार में सास और अन्य लोगो के द्वारा विरोध करने पर कुसुमा सास को करारा जबाब देती है - **"अगिन साच्छी कर के ही आये थे तुमारे पूत के संग, सात भँवरे फीर के| लिहाज रखा उसने? निभाया सम्बन्ध? दूसरी बियाह दी हमरी छाती पर| अँधेरे जीते रहे तुम लोग | खाक है बड़ेपन पर|उस दिन से कोई सम्बन्ध , कोई नाता नहीं रहा हमारा| जो व्याहकर लाया था , उससे ही कोई तालूक नाहि तो इस घर में हमारा कओंन ससुर और कओंन जेठ?"**[2]

सुगना की माँ जब जगेसर का विरोध करती की जमींन-जायदाद बेचकर पहाड़ मत खरीदो उससे हमारा कोई फायदा नहीं होगा, तब जगेसर नसे की धुत में सुगना की माँ को मार-पीटकर चला जाता है, क्योंकि वह तो अहिल्या के प्रेम में डूबा था, वह तो भूल गया की वह चार बच्चों का पिता है| जगेसर चच्चा का सब कुछ बिक जाने पर उनके पास कुछ नहीं बचता है , तो वह अपनी बेटी सुगना का विवाह, अभिलाख के बेटे के साथ तय कर देता है, किन्तु सुगना की माँ उसका कड़ा विरोध करती है| जगेसर उसे मार-पिट कर चुप कराता है| पुरुषोत्तम समाज में स्त्री को अपने ही बच्चो के भलाई के लिए कोई फैसला नहीं लेने दिया जाता है| जगेसर सुगना का विवाह अभिलाख के बेटे से करने के लिए, बऊ को सुगना की माँ

की शिकायत करते हुए कहता है की- **"तुम सुगना की जिंदगी नास कर रहे हो , सो नहीं होने देंगे हम| चाहे परलय हो जाये| यह सुगना की मतारी कहती है हमसे| उसकी इतके हिम्मत!"**[3]

मैत्रेयी पुष्पा ने अपने उपन्यास 'इदन्नम' में अपने नारी पात्र को पूर्ण आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाया है| चाहे वह कम शिक्षित हो, ये पूरी तरह से अशिक्षित| बऊ और मंदा जब अपने गाँव सोनपुरा लौट आते हैं, तब उन्हें पता चलता है कि उनकी सब जायदाद बिक चुकी है, वह भी धोखे से अपना घर चलाने के लिए और दूसरे को यह पता न चले कि उनके पास कुछ नहीं है। वह अपनी जमा पूंजी और जेवर बेच देती है| गांव और गांव से बाहर सबको यह पता चलता है कि मंदा रामायण बाचती है, उसे दूसरे गांव से रामायण पढ़ने के लिए बुलाते है| ठाकुरायन के घर में रामायण पढ़ने के बाद जब वह घर आती है, तब वह बऊ से कहती है- **"लो बऊ, ये दस रुपये! तुम्हारे लिए खाना भी भेजा है ठाकुरायन ने| "**[4]

मंदाकिनी अपने साथ साथ गांव के लोगो को भी आर्थिक समस्याओं को दूर करने के लिए कई संघर्ष करती है, वह केसर के मालिक अभिलाख सिंह से भिड़ जाती है और कहती है- **"इंसानियत के नाते ही सोच लो, जिस धरती से तुम पैसे खुदा रहे हो, हम पासीना बहा ले बस | बेघर होने से बच जाएंगे | अपनी जमीन से जुड़े रहकर हरे भरे बने रहेंगे इस गांव के लोग|"**[5] मंदा गाँव के लोगो के साथ-साथ पास के गांव के लोगो को अपने-अपने वोट का मूल्य बताती है| राजा साहब जब गाँव में वोट लेने आते हैं तो गांव के लोगो का मज़ाक बनाते कहते हैं कि - **"सरकार विकास लाती है, उन्हे विनाश लगता है, किसी का खेत, किसी का बाग, किसी का मेड़, किसी का पेड़, किसी का ताल, किसी का धुरा, किसका पोखर संकट से घिरा है| हमें क्या समझ रहे मूर्ख,कि इतनी छोटी-छोटी चीज़ो की परवाह की तो बड़ी-बड़ी प्रगति-योजनाएं लागू कैसे होगी? परियोजनाओ का क्या होगा? नई-नई तकनीको को किस स्थान पर प्रयोग करेंगे? देश आगे कैसे बढ़ेगा?."**[6]

मन्दाकिनी राजा साहब से व्यंग करते हुए कहती है - **ऐसा नहीं है कि कुछ भी न मिलता हो| हर वोटर को उसके वोट की कीमत धरते है आपके कार्यकर्ता | दो सौ, तीन सौ, चार सौ, पाच सौ, तक निपटा लेते है| परन्तु चुनाव की अवधि तो बहुत लम्बी होती है| पांच साल तक की दवा दारु, इलाज-उपचार के लिए काफी नहीं रहते चार सौ, पाच सौ|"**[7]

मन्दाकिनी अपनी व्यंगपूर्ण बातों से राजा-साहब की बोलती बंद कर देती है, और वोट न देने की बात पर कहती है- **"सौ करे अब की बार ठान लिया है की हम, कहे की नहीं करे की परवर्तित करेंगे| अगर नहीं तो ये खाली उठा ले जावे पेटी आपके आदमी| वोट नहीं पड़ेगा एक भी|"**[8]

नारी अपने जीवन में अनेक संघर्ष करती है, और हर संघर्ष से डट कर सामना भी करती है और जीत भी जाती है किन्तु मानसिक संघर्ष तो उसे अंदर ही अंदर खाये जाती है| मैत्रेयी पुष्पा ने अपने उपन्यास "इदन्नमम" में नारी के इस मानसिक संघर्ष को पूर्ण रूप से दर्शाया है| प्रेम (बहू ) जब मन्दाकिनी से मिलने कचहरी आती है तब बऊ प्रेम (बहू) को देखती भी

नहीं और मन्दा से कहती है - **“वो कैसे करेगी हमसे बातें? किस मुख से? जिंदगानी की आड़- मरजादा सांघ पाए? जवानी का जोश नहीं दाट पै सो घर लिया बेदनी किसब, तज गई आदमी की देहरी| अब सात जनम घर ले तबहू नहीं हो सकती महेन्द्र की चोखट जोग|”**[9] उपन्यास की नारी कुसुमा भाभी से यह सीख लिया जा सकता है कि वह अपने जीवन में वह कई मानसिक संघर्ष से गुजरती है, लेकिन वह अपने आप को टूटने नहीं देती , हौसला बनाये रखती है| मन्दाकिनी का मकरन्द से सगाई टूट जाने पर मन्दा अपना हौसला खोने लगती है, तब कुसुमा भाभी उसको समझाती है कि - **“पर एतेक सुन लो मन्दा की हम तुम्हारी हिम्मत जानते है, आइंदा आँखों में आँसू न देखे| सोचना छोड़ दो इन राछसों के बारे में|"**[10] कुसुमा के इस मानसिक संघर्ष का उदाहरण यह भी मिलता जब उसका पति यशपाल और घर के सभी लोगो को पता चल जाता है, कि वे गर्भवती है, और यह बच्चा दाऊजी का है, और पति यशपाल द्वारा बच्चा गिराने की बात पर वह करारा जबाब देती है , की- **"औ नकिल| खैर मना की बच्चा दाउजू का है| नहीं तो यह किसी का भी होता, गएल चलते आदमी का | तुम होते कौन हो हमारी नाकेबंदी करने वाले? तुम्हे क्या हक़, कुत्ते की जाति नहीं गिनाते हम तुम्हे|"**[11]

मन्दाकिनी नारी होने की वजह से वह चाहती है की सभी नारियों के साथ न्याय हो| इन्ही रुढ़िवादी परम्परा, मिथ्या बाह्यांडबरों को नकारने को कहती है और अपनी माँ के साथ हुए दुर्व्यवहारों और बऊ के इसी मानसिक संघर्ष से उबारने के लिए कहती है- “**सो हम कहते है बऊ पुरानी परम्परा की जो थोथी और दुःख दायनी निति है , उसकी अन्धभक्ति न करो| पुरुष पूजा का को मान मर्यादा का नाम न दो| तुम उसी परम्परा को निभाने की कोशिश करती रही और उसी का फल है की आजतक हमारे घर की स्थिति वही की वही है, और बुरी|"**[12] उसके अनुसार वक़्त के हिसाब से ही इंसान अपने मानसिक संघर्षों से जूझता हैं। वक़्त ही इंसान के मानसिक स्थिति का निर्णय करता हैं। गांव के सभी लोग प्रेम (बहु) को टुकुर-टुकुर देखते रहते हैं| मन्दाकिनी यह बात अपने मन में सोचती है, अगर पुरुष दूसरी शादी कर ले तो कोई गलत बात नहीं, और गाँव में कितने लोगो ने की है, फिर समाज के नजरो में औरतो का दूसरा व्याह क्यों वर्जित है| गांव के लोग प्रेम(बहू ) को देख कर उल्टी-सीधी बाते करते, गलत-गलत बातें बोलते , जिसका मंदा जबाब देना चाहती हैं, पर माँ के मना करने पर वह चुप हो जाती है, और माँ उसे समझाती है - “**मन्दा न | तुम यह न समझो कि इनके कहे का मलाल है हमें| जो हो चुका है, उसे ही अपनी बानी दे देकर दोहरा रहे है लोग| हमारे लिए कोई नई बात नहीं| यह तो एक दिन होना ही था, तुम मन मैला न करना|"**[13]

लेखिका ने अपने उपन्यास 'इदन्नमम' में आदिवासी नारी का मार्मिक चित्रण किया है| इस उपन्यास के छोटे छोटे पात्र लाहो, तुलसीं से उनके जीवन का हाल पता चलता है| केसर के मालिक अभिलाख सिंह के यहाँ नौकरी करते हैं, दिन-रात मेहनत करते फिर भी कुछ नहीं मिलता समझो मुफ्त में काम कर रहे हैं, और वह अपनी शिकायत किससे कहे कौन सुनने वाला है| लच्छो का पति परबतिया बीमार है, फिर भी वह इस बीमारी के हालत में भी काम करता है| एक दिन मंदा उसकी इस हालत को देख लेती है, तो पूछने पर लच्छो बताती है|

**"जिज्जी, कहु भी ख़राब होतो रहे, काम तो हर हलियत में करना पड़ेगा| नई तो खायेगे कहाँ से ? मालिक जबर जस्ती काम करा लेते है,तो बस इनका हाल ऐसा ही देख लो|"**[14]
अवधा अपनी बेटी सिरीदेवी का विवाह बलदेव से कराती है, पर जब बारात उसके घर पर ठहरती है, तो उसके पास कुछ नहीं रहता खिलाने को वह अपनी व्यथा मन्दाकिनी से कहती है कि **"जिज्जी, रात- दिन का भेद तियाग दिया हमने | लू-लपट और जलती दुपहरिया में पथरा तोरे हमने| रात के बखत चार-टीरक् की जगह आठ-आठ टीरक् की लादयी करी | हरी-बेमारी तक में टपरियों में बैठना - सोना गुनाह सामान समझा, और न इतके दिन नया पइसा माँगा - चाहे हमे चेन्ज-करमेथा उबेल के खाना पड़ा|"**[15] नी मजदूरी के बाद भी उनकी मजदूरी नहीं मिलती| आदिवासी स्त्री के साथ अगर कुछ गलत हो जाता है, तो उसका साथ कोई नहीं देता, बिना विवाह किए उसे अपनी जिंदगी में अपने मजे के लिए रखते है, ऐसा ही हाल तुलसीं की बेटी अहिल्या का भी हुआ| अहिल्या का रंग रूप देख कर जगेसर कक्का का मन फिसल जाता है | और उसे पाने के लिए अपनी जमींन-जायदाद बेच कर पहाड़ खरीद लेता है, और उसे पा लेता है, बाद में उसे पता चलता है कि अहिल्या की लछुवायी बिमारी उसे लग गई है, और वह उसे छोड़ देता है, बाद में अहिल्या की मृत्यु हो जाती है, ऐसा एक आदिवासी स्त्री के साथ नहीं होता| तुलसिन अभिलाख सिंह को देखकर चीख पड़ती है- **"अपनी बेटी और बहन का बदला न काढ़ा तो असल राऊतीन नहीं| खून पिऊगी आज अभिलाख की छाती का हरामी जगेसर का मीत| जान लेके छोडूगी|"**[16]

स्त्रियों के शोषण और दयनीय स्थिति का वर्णन मैत्रेयी पुष्पा अपने उपन्यास 'इदन्नमम' के माध्यम से कराती है| बऊ अपनी पोती मंदा को बचाने के लिए श्यामली गांव में रहने लगाती है, तब उनसे सरकारी कार्यालय के पेपर साइन करने के बहाने उनके खेतो और जमीनों के कागज पर भी दस्तखत करवा लेते है, यह बात बऊ को सोनपुरा अपने गांव आके पता चलता है| बऊ अपने दुःखी मन की बात मंदा से कहती है-

**"बेटा उनके पास हमारी गिरह कतरने की कैंची थी कि हमारी तकदीर की झोली में कोई छेद ---| अब क्या कहे बेटा अँधेरे की तरह बेबस थे हम लो हमारे ही हाथो बंधवा ली हमारी जमापूँजी |"**[17] प्रेमा (माँ) अपने ऊपर हुए आर्थिक एवं शारीरिक शोषण की व्यथा अपनी बेटी से कहती है- **"रतन सिंह से हमारा वास्ता नहीं रहा , हेलमेल उसी दिन टूट गया, जब उसने हमारी जमीं बिकवा दी | हमें कैसे-कैसे मजबूर किया था , वह कथा तो रहने ही दो बिन्नू ! और बहतेरे दुःख है कहने-सुंनाने को|"**[18]

शारीरिक शोषण मंदा के साथ तब होता है, जब वह बिरगवा गांव जाती है, स्कूल के कैलास मास्टर जिसे मंदा मामा कहकर बुलाती है, उसे बच्ची पर तरस न आई और एक दिन मौका पा कर उसका शोषण करने की हिम्मत से वहां पहुंच जाता है, लेकिन कुसुमा भाभी वह आकर मंदा को बचा लेती है और कैलास मास्टर को हिदायत देकर कहती है - **"किरा परे तुम्हारे मंदा मामा कहके टेरती है, सो भी नहीं ख्याल किया ? फिर कहे को बहन-भानजी मानने का स्वांग भरते हो ? राछस ! कुकर्मी ! अधर्मी !"**[19] नारी अगर बुराई के खिलाफ आवाज उठा

दे तो उसे शारीरिक शोषण से भी गुजरना पड़ता है|

मन्दाकिनी जब केशर अभिलाख सिंह के खिलाफ आवाज उठाती है, और गांव वालो को उनके हक़ के लिए जागरूक कराती है, तब अभिलाख सिंह का गुस्सा मन्दाकिनी के ऊपर उस दिन गुस्सा हो जाता है, जब दोनों रास्ते में एक दूसरे से टकराते है और यह बात पप्पू बऊ को बताता है- "**अभिलाख ने खूब गारी मरी दे जिज्जी को| और मन्दाकिनी ने भी खूब खरी खोटी सुनाई अभिलाख को, और अभिलाख ने उसके चरित्र पर उँगली उठाते हुए कहाँ - अभिलाख दुनिया-भर की सुनाने लगा | बोलै, 'हयो दुनिया जान रही है तू,हरे भी चरित्तर| तब ही तो श्यामलीवालो ने तुम्हे काढ़ दिया अपने गाँव से | यहाँ बनी फिर रही हो पुजारिन| तमाम तरह के पाखंड करने लगी | बड़ी बनी हो गरीब - पवार|**"[20]

कुसुमा भाभी, प्रेम, अहिल्या इन स्त्रीयों के माध्यम से मैत्रेयी पुष्पा जी ने 'इदन्नमम' उपन्यास परित्यक्ता नारी के जीवन की गाथा कही है| पति यशपाल कुसुमा को छोड़ कर दूसरी शादी कर लेता है, और उसे समाज और परिवार में वह दर्जा नहीं मिलता जो उसे मिलना चाहिए क्यों की वह तो छोड़ी हुई स्त्री है और वह अकेले पड़ गई है और इसी अकेलेपन में उसका रिश्ता छोटे ससुर दाउजू संग जुड़ जाता है उसे पता ही नहीं चलता और मंदा के पूछने पर इस रिश्ते का खुलासा करते हुये कुसुमा भाभी कहती है- **"बिन्नू सौ बात की एक बात है, नाते - सम्बन्ध का नाम बताये, गढ़े सो बेकार है | साँचा नाता तो प्यास और पानी का है|"**[21]

विधवा नारी की समस्या को मैत्रेयी पुष्पा जी ने अपने उपन्यास 'इदन्नमम' में बऊ (दादी), प्रेम (बहू ) द्वारा यथार्थ चित्रण किया है| बऊ छोटी उम्र में ही विधवा हो जाती है और कितने तकलीफो से अपने बेटे महेन्द्र का परवरिश करती है, क्या-क्या नहीं सुनती, झेलती, कितने लोग बऊ पर बुरी दृष्टि डालते है, उसका पता तो सिर्फ बऊ को है|

ऐसे ही अपने उन दिनों को याद करते ही बऊ मंदा से कहती है- **"तुम बच्चा हो हमारे लेखे, तुम्हे का - का बता देवे ? कैसे - कैसे कपटी -अन्यायियो को झेला है हमने , कैसे - कयासों से सल जाडड ली है| इतके जिंदगानी ऐसे ही नहीं काढ़ी| हसी खेल नहीं है | विधवा जनी का इज्जत आबरू से रहना, अपनी देहरी की नक् को सुद्दी रखना | येन भोगना भोगी है, पर मजाल है क़ि कोऊ उँगरिया उठा जाये |"**[22] महेन्द्र के मृत्यु के बाद, प्रेम (बहू) विधवा हो जाती है और रतन यादव द्वारा अपहरण किये जाने पर लोग उनके बारे में क्या - क्या बाते बनाने लगते है| जो कार्य वह ना करती उसके लिए भी उन्हें सुनना पड़ता है| पति के मृत्यु के बाद गांव के अनेक पुरुष के साथ उनके रिश्तो की चर्चा चली| क्योकि वह दिखने में सुंदर थी, और कम उम्र में विधवा हुई, इसलिए उनके ऊपर लांछन का टिका लगा दिया जाता है |

उपसंहार के रूप में हम कह सकते हैं कि मैत्रेयी पुष्पा को हिंदी साहित्य जगत में एक सशक्त लेखिका के रूप में अपना स्थान प्राप्त कर चुकी हैं। उन्होंने महिलाओं के दुःख-दर्द के साथ आदिवासी महिला के प्रति जो उनका लगाव हैं और उन लोगो की परेशानी, पीड़ा, मजबूरी का जो यथार्थ वर्णन किया हैं, वह सराहनीय हैं। कैसे मजदूर दिन रात मेहनत करता

हैं, चाहे कड़कती दोपहरी हो, या झमाझम बारिसों का मौसम, चाहे तुम्हारे शरीर का अंग काम न करे,  लेकिन तुम में अभी भी प्राण बाकी हैं, तो तुम्हे मजदूरी करनी हैं, उन्हें तो उनका मेहनताना भी नहीं मिलता। मैत्रेयी जी ने अपने विचारों को अपनी उपन्यास की पात्र मन्दाकिनी द्वारा व्यक्त किया हैं। मैत्रेयी जी ने नारी स्वतन्त्रता के संदर्भ में अपने विचार को रखते हुए कहती हैं, कि नारी को स्वंय ही अपनी लड़ाई लड़नी होगी, रास्ते मे बहुत से कठिनाईयों का सामना तो करना पड़ेगा, लेकिन बिना हारे, बिना थके वह अपनी लड़ाई लड़ती रहे तो उन्हें एक दिन सफलता अवश्य मिलेगी क्योंकि सफलता का दूसरा नाम हैं संघर्ष।

## संदर्भ सूची -


1) इदन्नमम - मैत्रेयी पुष्पा, किताबघर प्रकाशन, संस्करण - 2008, पृष्ठ क्र. - 307
2) वही, पृष्ठ क्र. - 166
3) वही, पृष्ठ क्र. - 378
4) वही, पृष्ठ क्र. - 198
5) वही, पृष्ठ क्र. - 226
6) वही, पृष्ठ क्र. - 352
7) वही, पृष्ठ क्र. - 353
8) वही, पृष्ठ क्र. - 354
9) वही, पृष्ठ क्र. - 165
10) वही, पृष्ठ क्र. - 168
11)वही, पृष्ठ क्र. - 141
12) वही, पृष्ठ क्र. - 309
13) वही, पृष्ठ क्र. - 312
14) वही, पृष्ठ क्र. - 259
15) वही, पृष्ठ क्र. - 267
16) वही, पृष्ठ क्र. - 329
17) वही, पृष्ठ क्र. - 183
18) वही, पृष्ठ क्र. - 312
19) वही, पृष्ठ क्र. - 106
20) वही, पृष्ठ क्र. - 201
21) वही, पृष्ठ क्र. - 94
22) वही, पृष्ठ क्र. - 306



**नाम - शालिनी विजयकुमार जायसवाल**

**कक्षा - स्नातकोत्तर, हिन्दी विभाग**